जुगनुओं की लालटेन

जुगनुओं
की लालटेन

नाथन ने पूछा,
“जब पिताजी यहाँ रहते थे, तो क्या वो मेरी ही उम्र के थे?”
नानी मुस्कुराईं. “हाँ, बिलकुल. हम जब इस घर में आए
तब तुम्हारे पिताजी करीब छह साल के होंगे.”
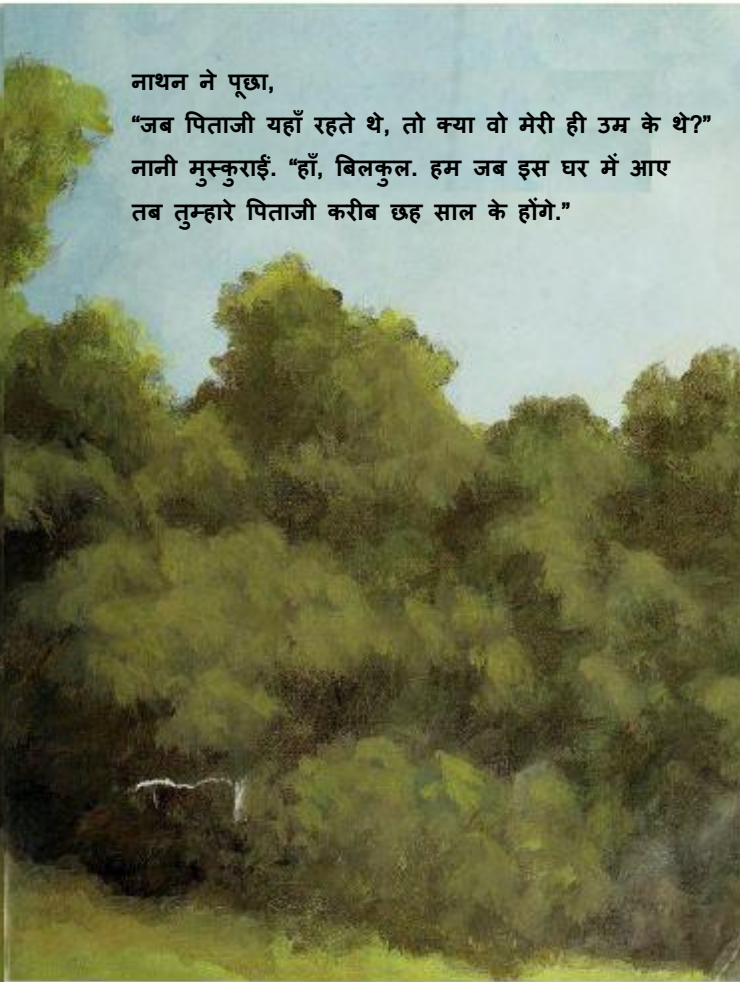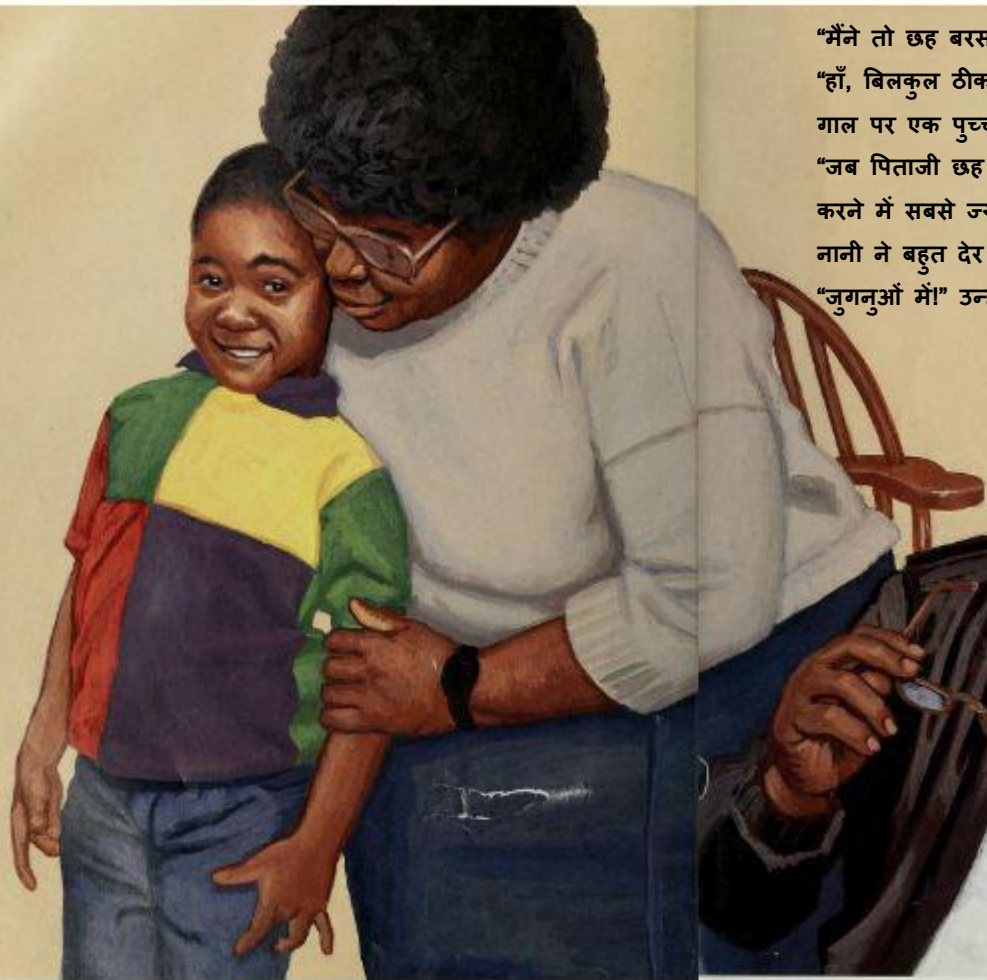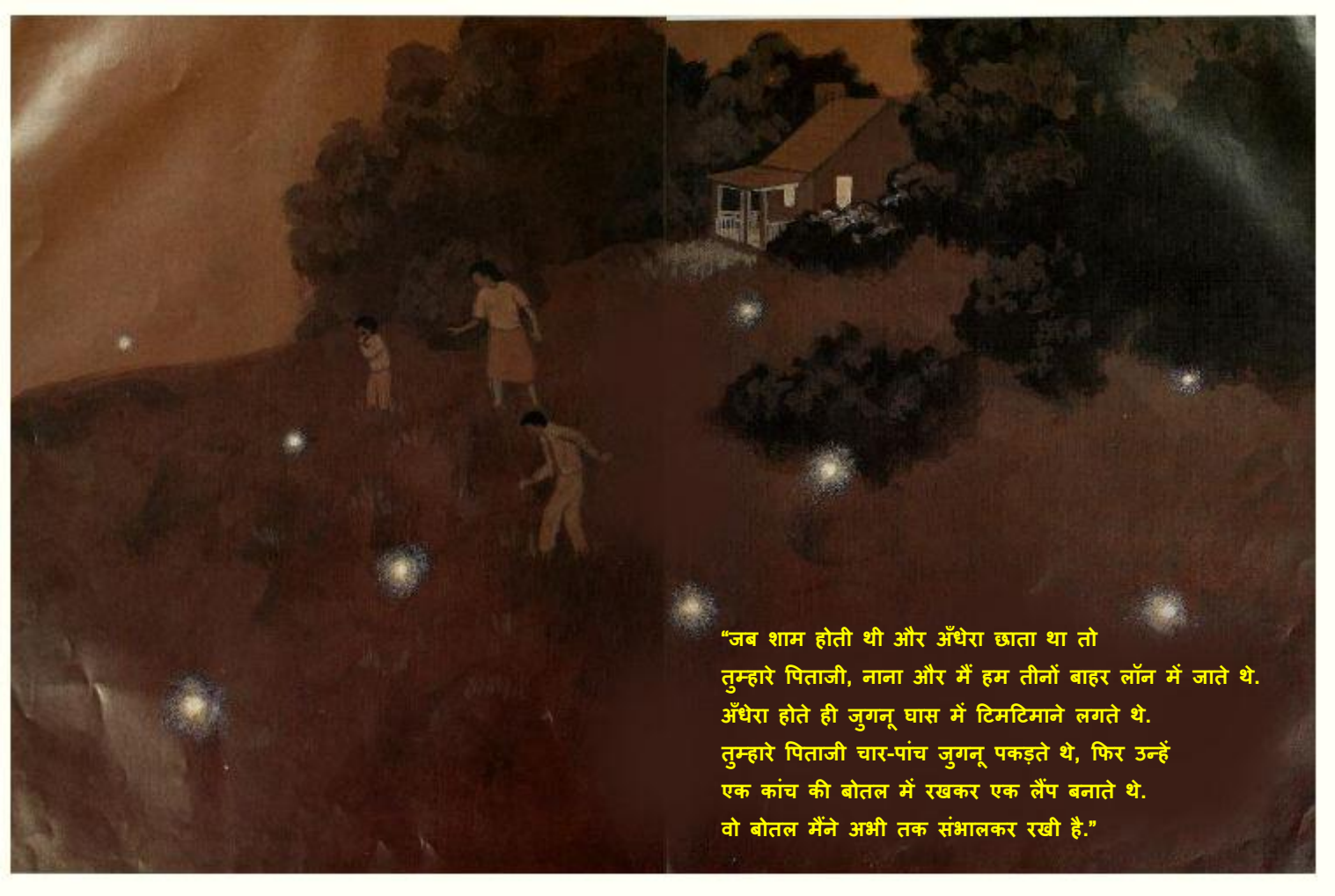
“मैंने तो छह बरस का हो चुका हूँ,” नाथन ने कहा.

“हाँ, बिलकुल ठीक,” और फिर नानी ने नाथन के गाल पर एक पुच्ची दी.
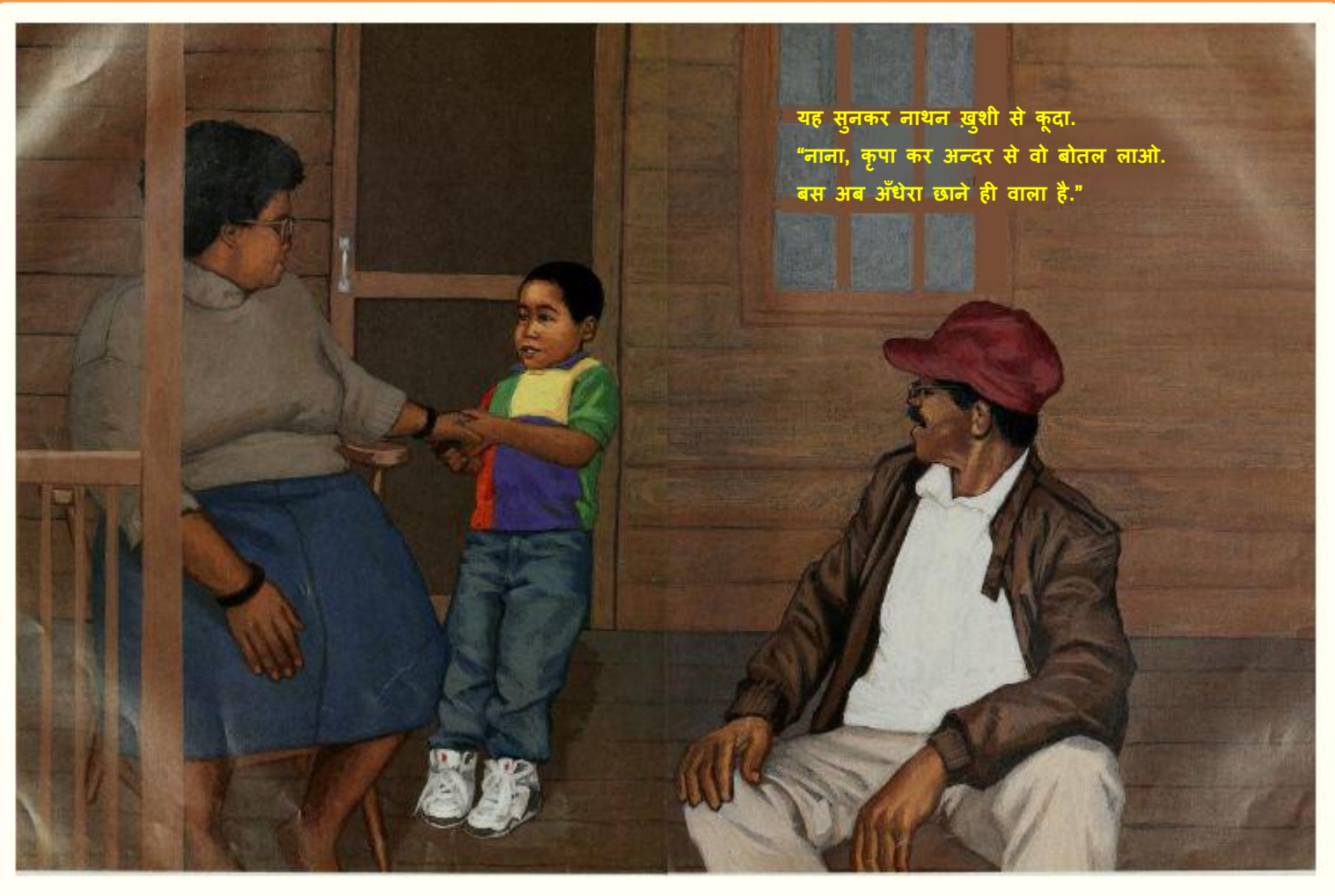
“जब पिताजी छह साल के थे तो उन्हें किस चीज़ को करने में सबसे ज्यादा मज़ा आता था?” नाथन ने पूछा.

नानी ने बहुत देर तक सोचा.

“जुगनुओं में!” उन्होंने उत्तर दिया.
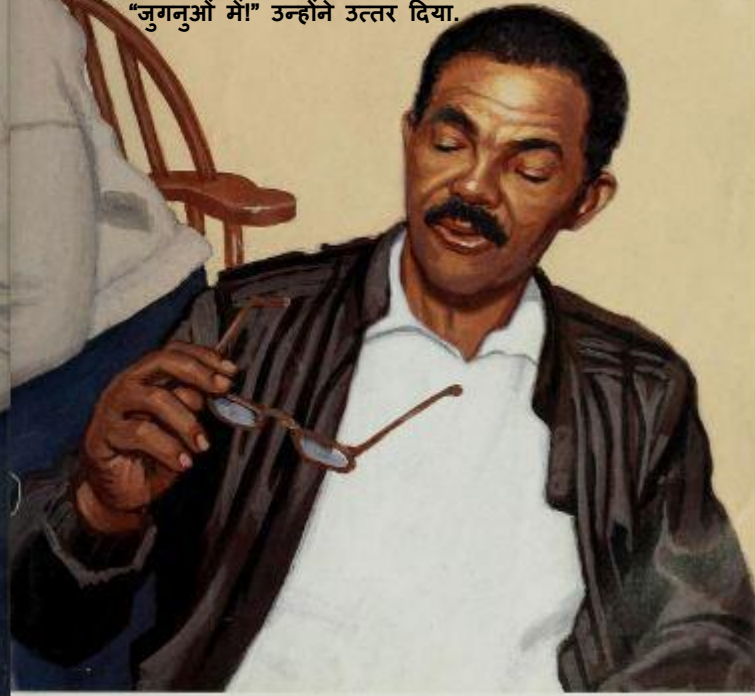
“जब शाम होती थी और अँधेरा छाता था तो
तुम्हारे पिताजी, नाना और मैं हम तीनों बाहर लॉन में जाते थे.
अँधेरा होते ही जुगनू घास में टिमटिमाने लगते थे.
तुम्हारे पिताजी चार-पांच जुगनू पकड़ते थे, फिर उन्हें
एक कांच की बोतल में रखकर एक लैंप बनाते थे.
वो बोतल मैंने अभी तक संभालकर रखी है.”

यह सुनकर नाथन ख़ुशी से कूदा.
“नाना, कृपा कर अन्दर से वो बोतल लाओ.
बस अब अँधेरा छाने ही वाला है.”
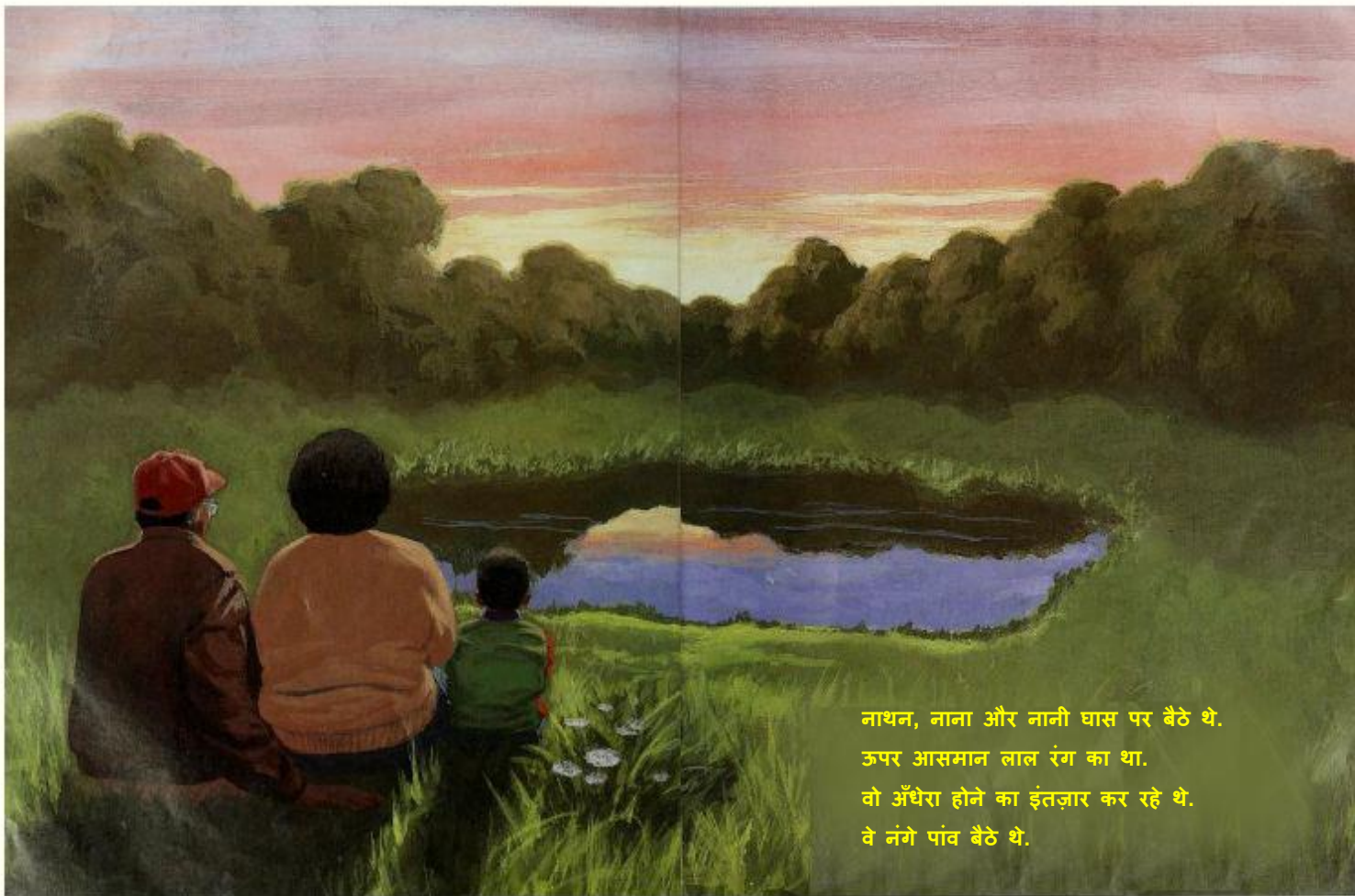
नाथन, नाना और नानी घास पर बैठे थे.

ऊपर आसमान लाल रंग का था.

वो अँधेरा होने का इंतज़ार कर रहे थे.

वे नंगे पांव बैठे थे.

तभी एक लेडीबग नाथन ने पैर पर चढ़ी.
गोल्डफिंच चिड़िया सफ़ेद फूलों के ऊपर मंडराई.
एक तितली पंख फड़फड़ाती हुई उनके सामने से गुज़री.
पास के ताल में से मेंढकों के टर्राने की आवाज़ आई.
गुड-नाईट, गुड-नाईट.
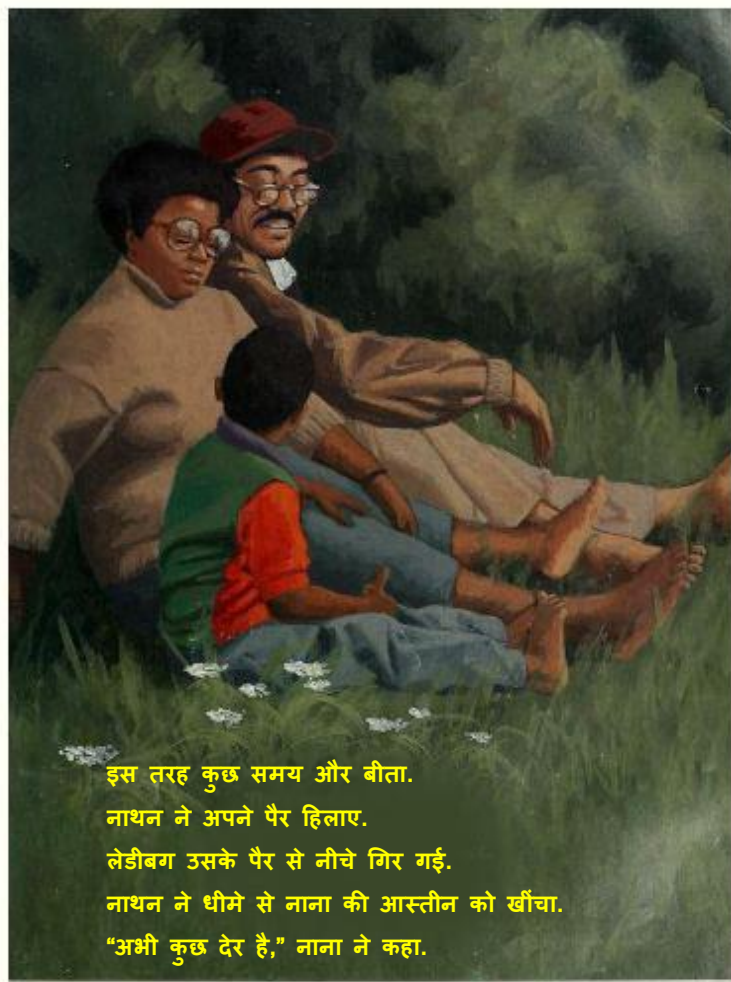
इस तरह कुछ समय और बीता.
नाथन ने अपने पैर हिलाए.
लेडीबग उसके पैर से नीचे गिर गई.
नाथन ने धीमे से नाना की आस्तीन को खींचा.
“अभी कुछ देर है,” नाना ने कहा.

इस तरह कुछ और मिनट बीते.
फिर नाथन ने नानी के हाथ को खींचा.
“अब तो अँधेरा हो गया है.
पर जुगनू अभी भी गायब हैं?”
“वो जल्द ही आयेंगे.”
नाना और नानी ने सिर हिलाया.

फिर कुछ ही देर में
एक, दो, तीन, चार जुगनू
उन्हें टिमटिमाते हुए दिखाई दिए.
अब घास में सभी ओर जुगनू टिमटिमा रहे थे.
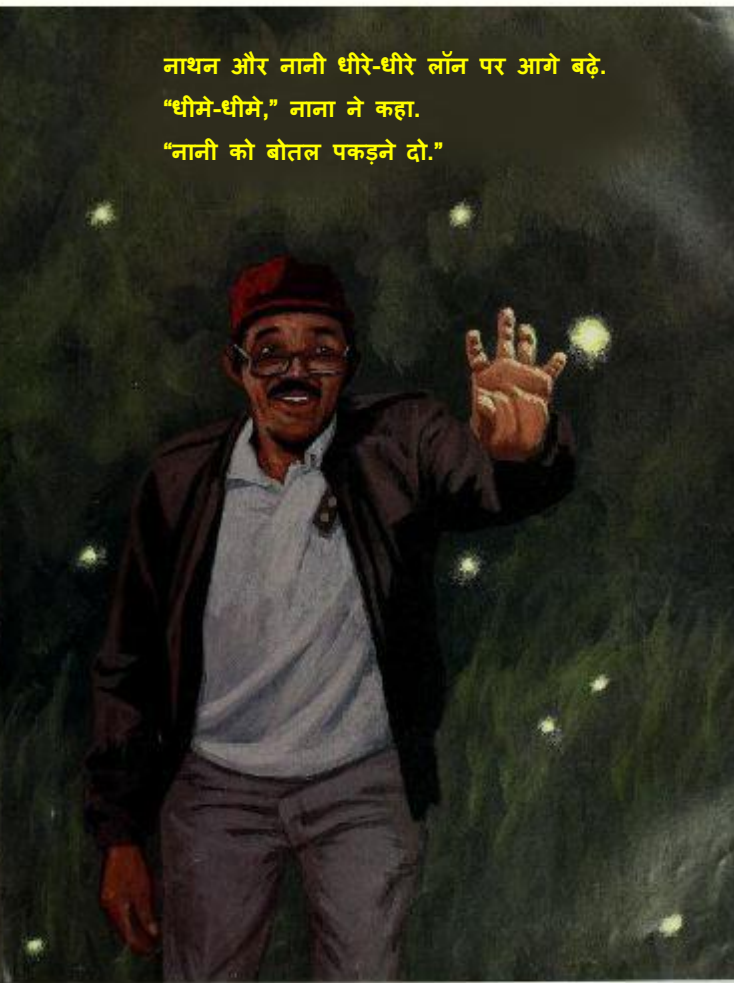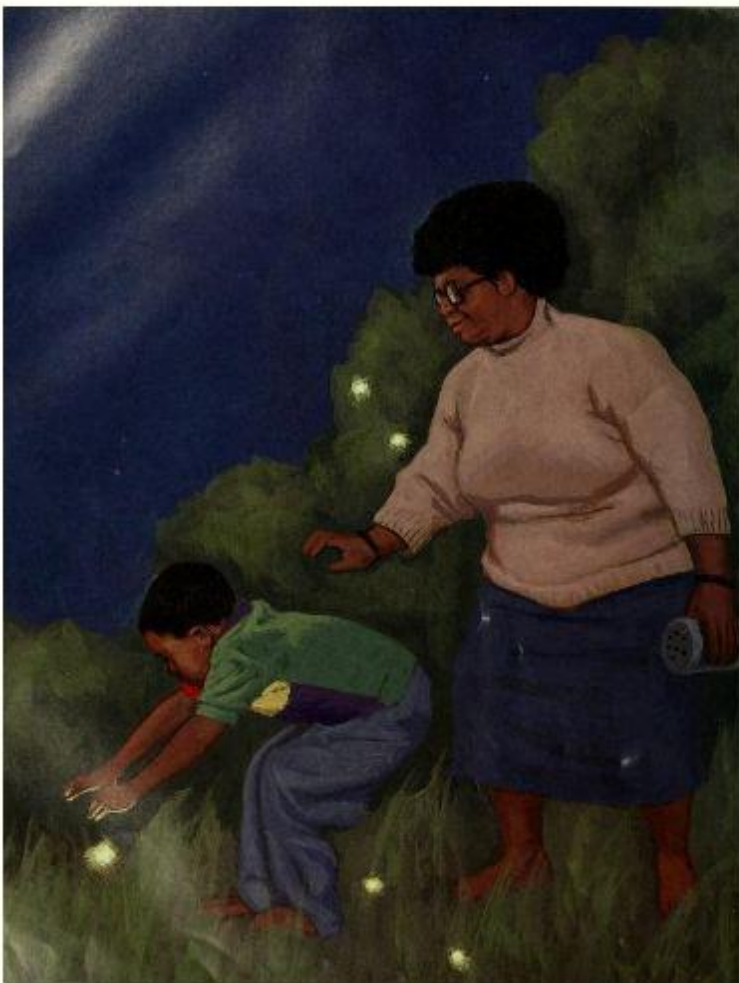
नाथन और नानी धीरे-धीरे लॉन पर आगे बढ़े.

“धीमे-धीमे,” नाना ने कहा.

“नानी को बोतल पकड़ने दो.”

फिर नाथन ने अपने हाथों में एक जुगनू पकड़ा.
“नाना मुझे एक जुगनू मिला है!
मैं उसे झिलमिलाते हुए देखना चाहता हूँ.”
“ज़रा सावधानी से पकड़ो,” नाना ने कहा.

पर तब तक देर हो चुकी थी.
जुगनू उड़ गया था.
नानी ने फुसफुसाते हुए कहा, “बिल्कुल तुम्हारे पिताजी जैसे.”

“तुम अपने दोनों हाथों को एक-दूसरे पर कसकर रखो.
उसके बाद तुम जुगनू को बोतल में डालना.”
नाथन ने अगली बार वही करने का वादा किया.
कुछ ही देर में बोतल एक लालटेन जैसे टिमटिमाने लगी.
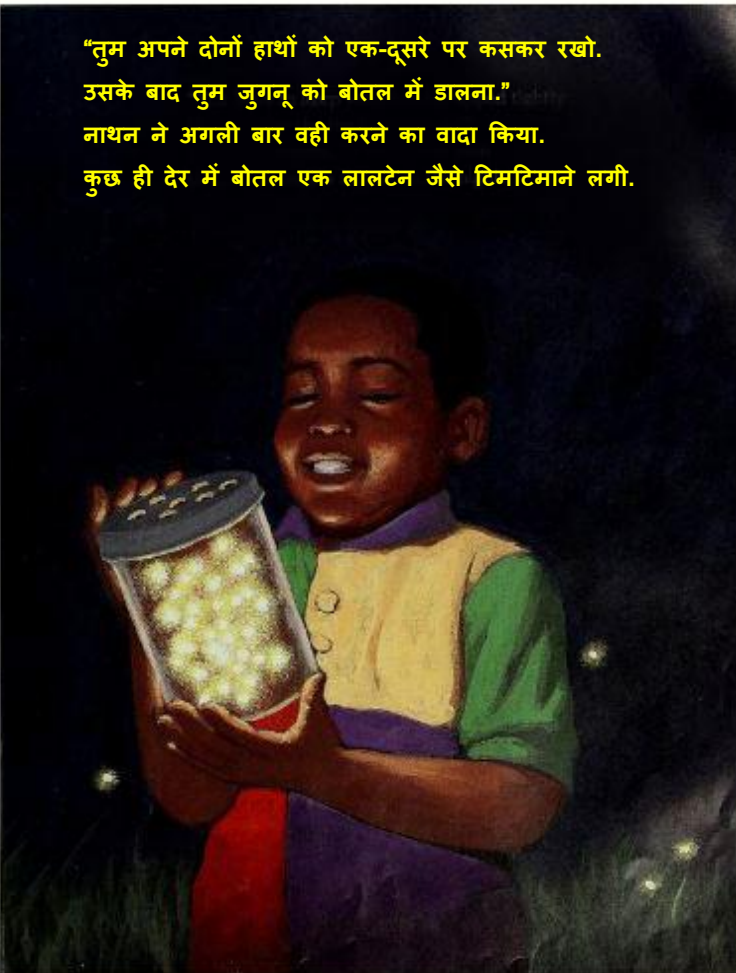
जुगनुओं की लालटेन पलंग के पास रखी थी.

नानी ने नाथन को चादर उढ़ाई.

नाना ने नाथन के गाल पर पुच्ची दी.

"क्या आपको मेरे साथ जुगनू पकड़ना अच्छा लगा?" नाथन ने पूछा.

"हाँ, हमें बहुत अच्छा लगा."

"उतना ही अच्छा लगा जितना पिताजी के साथ लगता था?"

"हाँ, बिल्कुल वैसा ही."

"जब मैं सो जाऊं तब आप जुगनुओं
को बाहर छोड़ दें."

नाना और नानी मुस्कुराए.

"तुम्हारे पिताजी भी हमेशा यही कहते थे."
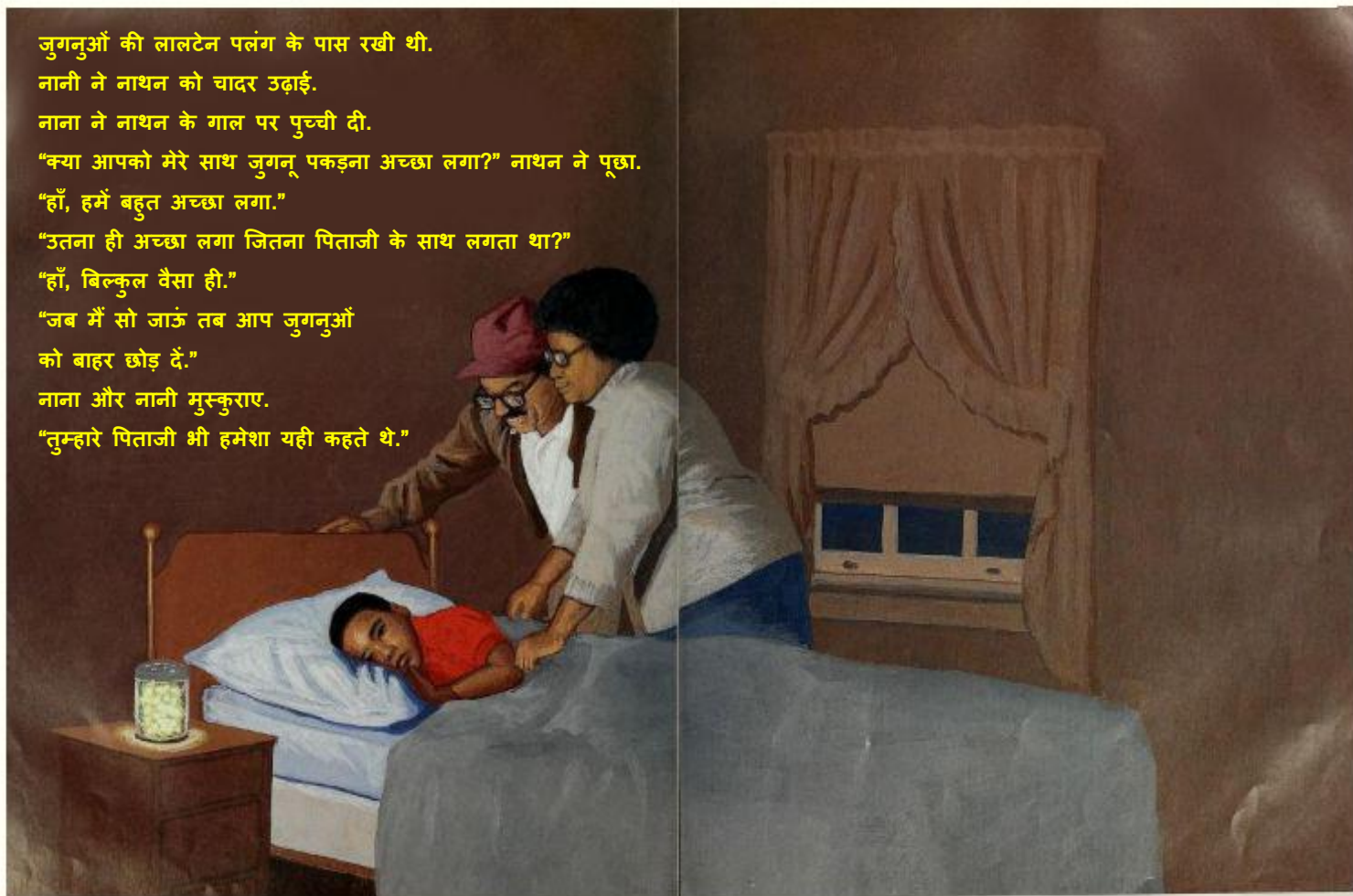
“मैं माँ और पिताजी को आपके साथ जुगनू पकड़ने
के बारे में बताऊंगा.” नाथन को जम्भाई आई.
उसने जुगनुओं की लालटेन तकिये के पास रख दी.
उसने अपने गाल को बोतल के कांच से चिपकाया.
“नानी मुझे बहुत ख़ुशी है कि आपने इस बोतल को संभालकर रखा.”
“हमें भी इस बात की बहुत ख़ुशी है,” नाना-नानी ने कहा.
फिर वे दबे पांव कमरे से बाहर चले गए.